Job

Chapter 24

Hindi Interlinear

Reference: Hindi Easy-to-Read Version

1

מַדּוּעַ	מִשַּׁדַּי	לֹא־	נִצְפְּנוּ	עִתִּים	[וידעו]	(וְֹיֹדְעָיו)	לֹא־	חָזוּ	יָמָיו׃
क्यों	सर्वशक्तिमान-से	नहीं	छिपाए-गए	समय	और-जानने-वाले	और-जानने-वाले	नहीं	देखते	उसके-दिन
H4069	H7706	H3808	H6845	H6256	H3045	H3045	H3808	H2372	H3117

> “सर्वशक्तिमान परमेश्वर क्यों नहीं न्याय करने के लिये समय नियुक्त करता है? लोग जो परमेश्वर को मानते हैं उन्हें क्यों न्याय के समय की व्यर्थ बाट जोहनी पड़ती है

2

גְּבֻלוֹת	יַשִּׂיגוּ	עֵדֶר	גָּזְלוּ	וַיִּרְעוּ׃
सीमाएँ	वे-हटाते-हैं	झुंड	वे-लूटते-हैं	और-चराते-हैं
H1367	H5381	H5739	H1497	

> “लोग अपनी सम्पत्ति के चिन्हों को, जो उसकी सीमा बताते है, सरकाते रहते हैं ताकि अपने पड़ोसी की थोड़ी और धरती हड़प लें! लोग पशु को चुरा लेते हैं और उन्हें चरागाहों में हाँक ले जाते हैं।

3

חֲמוֹר	יְתוֹמִים	יִנְהָגוּ	יַחְבְּלוּ	שׁוֹר	אַלְמָנָה׃
गदहा	अनाथों-का	वे-हाँक-ले-जाते-हैं	वे-बंधक-लेते-हैं	बैल	विधवा-का
H2543	H3490			H7794	H0490

> अनाथ बच्चों के गधे को वे चुरा ले जाते हैं। विधवा की गाय वे खोल ले जाते है। जब तक की वह उनका कर्ज नहीं चुकाती है।

4

יַטּוּ	אֶבְיוֹנִים	מִדָּרֶךְ	יַחַד	חֻבְּאוּ	עֲנִיֵּי־	אָרֶץ׃
वे-हटाते-हैं	गरीबों-को	मार्ग-से	एक-साथ	छिप-जाते-हैं	गरीब	पृथ्वी-के
H5186	H0034	H1870		H2244	H6035	H0776

> वे दीन जन को मजबूर करते है कि वह छोड़ कर दूर हट जाने को विवश हो जाता है, इन दुष्टों से स्वयं को छिपाने को।

5

הֵן	פְּרָאִים	בַּמִּדְבָּר	יָצְאוּ	בְּפָעֳלָם	מְשַׁחֲרֵי	לַטָּרֶף	עֲרָבָה
देखो	जंगली-गदहों-की-तरह	जंगल-में	वे-निकलते-हैं	अपने-काम-में	खोजने-वाले	शिकार-के-लिए	जंगल
H2005	H6501		H3318	H6467	H7836	H2964	H6160
לוֹ	לֶחֶם	לַנְּעָרִים׃					
उनके-लिए	रोटी	जवानों-के-लिए					
	H3899	H5288					

> “वे दीन जन उन जंगली गदहों जैसे हैं जो मरुभूमि में अपना चारा खोजा करते हैं। गरीबों और उनके बच्चों को मरुभूमि भोजन दिया करता है।

6

בַּשָּׂדֶה	בְּלִילוֹ	[יקצירו]	(יִקְצוֹרוּ)	וְכֶרֶם	רָשָׁע	יְלַקֵּשׁוּ׃
खेत-में	उसका-चारा	वे-काटते-हैं	वे-काटते-हैं	और-दाख-की-बारी	दुष्ट-की	वे-इकट्ठे-करते-हैं
	H1098			H3754	H7563	H3953

> गरीब लोग भूसा और चारा साथ साथ ऐसे उन खेतों से पाते हैं जिनके वे अब स्वामी नहीं रहे। दुष्टों के अंगूरों के बगीचों से बचे फल वे बीना करते हैं।

7

עָרוֹם	יָלִינוּ	מִבְּלִי	לְבוּשׁ	וְאֵין	כְּסוּת	בַּקָּרָה׃
नंगे	वे-रात-बिताते-हैं	बिना	वस्त्र	और-नहीं-है	ओढ़ना	ठंड-में
H6174		H1097	H3830	H0369	H3682	H7135

> दीन जन को बिना कपड़ों के रातें बितानी होंगी, सर्दी में उनके पास अपने ऊपर ओढ़ने को कुछ नहीं होगा।

8

מִזֶּרֶם	הָרִים	יִרְטָבוּ	וּמִבְּלִי	מַחְסֶה	חִבְּקוּ־	צוּר׃
बारिश-से	पहाड़ों-की	वे-भीगते-हैं	और-बिना	आसरा	वे-गले-लगाते-हैं	चट्टान
H2230	H2022	H7372	H1097	H4268	H2263	H6697

> वे वर्षा से पहाड़ों में भीगें हैं, उन्हें बड़ी चट्टानों से सटे हुये रहना होगा, क्योंकि उनके पास कुछ नहीं जो उन्हें मौसम से बचा ले।

9

יִגְזְלוּ	מִשֹּׁד	יָתוֹם	וְעַל־	עָנִי	יַחְבֹּלוּ׃
वे-छीनते-हैं	छाती-से	अनाथ-की	और	गरीब-से	वे-बंधक-लेते-हैं
H1497		H3490	H5764	H6041	

बुरे लोग माता से वह बच्चा जिसका पिता नहीं है छीन लेते हैं। गरीब का बच्चा लिया करते हैं, उसके बच्चे को, कर्ज के बदले में वे बन्धुवा बना लेते हैं।

10

עָרוֹם	הִלְּכוּ	בְּלִי	לְבוּשׁ	וּרְעֵבִים	נָשְׂאוּ	עֹמֶר׃
नंगे	वे-चलते-हैं	बिना	वस्त्र	और-भूखे	वे-उठाते-हैं	पूला
H6174	H1980	H1097	H3830	H7457	H5375	

गरीब लोगों के पास वस्त्र नहीं होते हैं, सो वे काम करते हुये नंगे रहा करते हैं। दुष्टों के गट्ठर का भार वे ढोते है, किन्तु फिर भी वे भूखे रहते हैं।

11

בֵּין־	שׁוּרֹתָם	יַצְהִירוּ	יְקָבִים	דָּרְכוּ	וַיִּצְמָאוּ׃
बीच	उनकी-कतारों-के	वे-तेल-पेरते-हैं	हौदों-में	वे-रौंदते-हैं	और-प्यासे-हैं
H0996		H6671	H3342	H1869	H6770

गरीब लोग जैतून का तेल पेर कर निकालते हैं। वे कुंडो में अंगूर रौंदते हैं फिर भी वे प्यासे रहते हैं।

12

מֵעִיר	מְתִים	יִנְאָקוּ	וְנֶפֶשׁ־	חֲלָלִים	תְּשַׁוֵּעַ	וֶאֱלוֹהַּ	לֹא־	יָשִׂים	תִּפְלָה׃
नगर-से	मरने-वाले	कराहते-हैं	और-जान	घायलों-की	दोहाई-देती-है	और-ईश्वर	नहीं	रखता	मूर्खता
	H4962	H5008	H5315		H7768	H0433	H3808		H8604

मरते हुये लोग जो आहें भरते हैं। वे नगर में सुनाई देती हैं। सताये हुये लोग सहारे को पुकारते हैं, किन्तु परमेश्वर नहीं सुनता है।

13

הֵמָּה	הָיוּ	בְּמֹרְדֵי־	אוֹר	לֹא־	הִכִּירוּ	דְרָכָיו	וְלֹא	יָשְׁבוּ	בִּנְתִיבֹתָיו׃
वे	थे	विद्रोहियों-में-से	ज्योति-के	नहीं	वे-जानते-थे	उसके-मार्ग	और-नहीं	वे-बैठते-थे	उसकी-पगडंडियों-में
H1992	H1961	H4775	H0216	H3808		H1870	H3808	H3427	

“कुछ ऐसे लोग हैं जो प्रकाश के विरुद्ध होते हैं। वे नहीं जानना चाहते हैं कि परमेश्वर उनसे क्या करवाना चाहता है। परमेश्वर की शह पर वे नहीं चलते हैं।

14

לָאוֹר	יָקוּם	רוֹצֵחַ	יִקְטָל־	עָנִי	וְאֶבְיוֹן	וּבַלַּיְלָה	יְהִי	כַגַּנָּב׃
ज्योति-में	उठता-है	हत्यारा	वह-मारता-है	गरीब	और-दरिद्र-को	और-रात-को	वह-होता-है	चोर-की-तरह
H0216		H7523	H6991	H6041	H0034	H3915	H1961	H1590

हत्यारा तड़के जाग जाया करता है गरीबों और जरुरत मंद लोगों की हत्या करता है, और रात में चोर बन जाता है।

15

וְעֵין	נֹאֵף	שָׁמְרָה	נֶשֶׁף	לֵאמֹר	לֹא־	תְשׁוּרֵנִי	עָיִן	וְסֵתֶר	פָּנִים
और-आँख	व्यभिचारी-की	देखती-है	सांझ	कहते-हुए	नहीं	मुझे-देखेगी	आँख	और-आड़	चेहरे-की
	H5003	H8104	H5399	H0559	H3808	H7789			H6440

יָשִׂים׃
वह-रखता-है

वह व्यक्ति जो व्यभिचार करता है, रात आने की बाट जोहा करता है, वह सोचता है उस कोई नहीं देखेगा और वह अपना मुख ढक लेता है।

16

חָתַר	בַּחֹשֶׁךְ	בָּתִּים	יוֹמָם	חִתְּמוּ־	לָמוֹ	לֹא־	יָדְעוּ	אוֹר׃
वह-खोदता-है	अंधकार-में	घरों-को	दिन-में	वे-मुहर-लगाते-हैं	अपने-लिए	नहीं	वे-जानते	ज्योति
H2864	H2822		H3119	H2856		H3808	H3045	H0216

दुष्ट जन जब रात में अंधेरा होता है, तो सेंध लगा कर घर में घुसते हैं। किन्तु दिन में वे अपने ही घरों में छुपे रहते हैं, वे प्रकाश से बचते हैं।

17

כִּי	יַחְדָּו	בֹּקֶר	לָמוֹ	צַלְמָוֶת	כִּי־	יַכִּיר	בַּלְהוֹת	צַלְמָוֶת׃
क्योंकि	एक-साथ	सुबह	उनके-लिए	मृत्यु-छाया	क्योंकि	वह-जानता-है	आतंक	मृत्यु-छाया-के
		H1242		H6757			H1091	H6757

उन दुष्ट लोगों का अंधकार सुबह सा होता है, वे आतंक व अंधेरे के मित्र होते है।

18

קַל־	הֽוּא।	עַל־	פְּנֵי־	מַיִם	תְּקֻלַּל	חֶלְקָתָם	בָּאָרֶץ	לֹֽא־	יִפְנֶה	דֶּרֶךְ	כְּרָמִֽים׃
हल्का	वह	सतह-पर	सतह-पर	पानी-की	शापित-है	उनका-भाग	पृथ्वी-में	नहीं	वह-मुड़ता	मार्ग	दाख-की-बारियों-की-ओर
H7031	H1931		H6440	H4325	H7043		H0776	H3808	H6437	H1870	H3754

"दुष्ट जन ऐसे वहा दिये जाते हैं, जैसे झाग बाढ़ के पानी पर। वह धरती अभिशिप्त है जिसके वे मालिक हैं, इसलिये वे अंगूर के बगीचों में अगूंर बिनने नहीं जाते हैं।

19

צִיָּה	גַם־	חֹם	יִגְזְלוּ	מֵימֵי־	שֶׁלֶג	שְׁאוֹל	חָטָֽאוּ׃
सूखा	भी	गर्मी	छीन-लेते-हैं	पानी	बर्फ-का	शेओल	पापियों-को
H6723	H1571	H2527	H1497	H4325	H7950	H7585	H2398

जैसे गर्म व सूखा मौसम पिघलती बर्फ के जल को सोख लेता है, वैसे ही दुष्ट लोग कब्र द्वारा निगले जायेंगे।

20

יִשְׁכָּחֵהוּ	רֶחֶם।	מְתָקוֹ	רִמָּה	עוֹד	לֹֽא־	יִזָּכֵר	וַתִּשָּׁבֵר	כָּעֵץ	עַוְלָֽה׃
उसे-भूल-जाएगी	गर्भ	मीठा-होगा	कीड़ा	फिर	नहीं	वह-याद-किया-जाएगा	और-टूटेगी	पेड़-की-तरह	अधर्म
H7911	H7358	H4988	H7415	H5750	H3808	H2142	H7665	H6086	

दुष्ट मरने के बाद उसकी माँ तक उसे भूल जायेगी, दुष्ट की देह को कीड़े खा जायेंगे। उसको थोड़ा भी नहीं याद रखा जायेगा, दुष्ट जन गिरे हुये पेड़ से नष्ट किये जायेंगे।

21

רֹעֶה	עֲקָרָה	לֹא	תֵלֵד	וְאַלְמָנָה	לֹא	יְיֵטִֽיב׃
चरने-वाला	बाँझ-को	नहीं	जन्म-देती	और-विधवा	नहीं	वह-भलाई-करता
	H6135	H3808	H3205	H0490	H3808	H3190

ऐसी स्त्री को जिसके बच्चे नहीं हो सकते, दुष्ट जन उन्हें सताया करते हैं, वे उस स्त्री को दु:ख देते हैं, वे किसी विधवा के प्रति दया नहीं दिखाते हैं।

22

וּמָשַׁךְ	אַבִּירִים	בְּכֹחוֹ	יָקוּם	וְלֹא־	יַאֲמִין	בַּחַיִּֽין׃
और-वह-खींचता-है	शक्तिशाली-को	अपनी-शक्ति-से	वह-उठता-है	और-नहीं	वह-विश्वास-करता	जीवन-में
H4900	H0047			H3808	H0539	

बुरे लोग अपनी शक्ति का उपयोग बलशाली को नष्ट करने के लिये करते है। बुरे लोग शक्तिशाली हो जायेंगे, किन्तु अपने ही जीवन का उन्हें भरोसा नहीं होगा कि वे अधिक दिन जी पायेंगे।

23

יִתֶּן־	לוֹ	לָבֶטַח	וְיִשָּׁעֵן	וְעֵינֵיהוּ	עַל־	דַּרְכֵיהֶֽם׃
वह-देता-है	उसे	सुरक्षा-के-लिए	और-वह-टिकता-है	और-उसकी-आँखें	उनके-मार्गों-पर	उनके-मार्ग
H5414		H0983	H8172			H1870

सम्भव है थोड़े समय के लिये परमेश्वर शक्तिशाली को सुरक्षित रहने दे, किन्तु परमेश्वर सदा उन पर आँख रखता है।

24

רוֹמּוּ	מְּעַט।	וְאֵינֶנּוּ	וְהֻמְּכוּ	כַּכֹּל	יִקָּפְצוּן	וּכְרֹאשׁ	שִׁבֹּלֶת	יִמָּלוּ׃
वे-ऊँचे-उठे	थोड़ी-देर-में	और-वे-नहीं-हैं	और-वे-नीचे-लाए-जाते-हैं	सब-की-तरह	वे-इकट्ठे-होते-हैं	और-सिर-की-तरह	बाली	वे-काटे-जाते-हैं
H7426	H4592	H0369	H4355	H3605	H7092			

दुष्ट जन थोड़े से समय के लिये सफलता पा जाते हैं किन्तु फिर वे नष्ट हो जाते हैं। दूसरे लोगों की तरह वे भी समेट लिये जाते हैं। अन्न की कटी हुई बाल के समान वे गिर जाते हैं।

25

וְאִם־	לֹא	אֵפוֹ	מִי	יַכְזִיבֵנִי	וְיָשֵׂם	לְאַל	מִלָּתִֽי׃	ס
और-यदि	नहीं	तब	कौन	मुझे-झूठा-ठहराएगा	और-रखेगा	शून्य-के-लिए	मेरी-बात	—
	H3808	H0645	H4310	H3576		H0408	H4405	

> “यदि ये बातें सत्य नहीं हैं तो कौन प्रमाणित कर सकता है कि मैंने झूठ कहा है कौन दिखा सकता है कि मेरे शब्द प्रलयमात्र हैं?”